दीपावली पूजन विधी

त्योहारों में सर्वश्रेष्ठ त्योहार दीपावली क्योंकि इसे भारतभर में बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाता है । यह दीपकों का, प्रकाश का, चैतन्य का, शुभ संकल्पों का मंगलमय त्यौहार है ।

जैन समाज में इस त्योहार का विशेष महत्त्व इसलिए है कि इसी दिन अमावस्या को भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ था । वे जन्म-मृत्यु के दुखों से मुक्त होकर मोक्ष गामी हुए । चतुर्दशी और अमावस्या दो दिन लगातार भ. महावीर स्वामी जनसमुदायों को अंतिमदेशना (उपदेश) देते रहे । वह उपदेश ही उत्तराध्ययन सूत्र है । जिसका पठन-पाठन श्रवण इन दिनों में किया जाता है । कई महानुभाव बडी श्रध्दा के साथ उपवास करते है । भ. महावीर का जाप करते हैं । पौषध के साथ उपवास करते हैं । कार्तिक सूद प्रतिपदा के दिन प्रथम गणधर गौतमस्वामीजी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ । नए वर्ष के प्रात:काल में गौतमस्वामीजी का जाप किया जाता है । सभी भक्त जन सुबह गुरु भगवंतों के मुखारविंद से शुभ मांगलिक श्रवण करते है । मंत्र गर्भित स्तोत्र का श्रवण करते हैं। इसके बाद ही अपने कार्य का प्रारंभ करते हैं ।

दीपावली त्योहार हमारे लिए एक महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक त्योहार है ।

दीपावली पूजन विधी

सर्व प्रथम घर के सभी सदस्य मंगलभावना के साथ तीन बार नवकार महामंत्र का भक्तिसे भर कर उच्चारण करे ।

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिध्दाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं,
एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

तीर्थंकरों को वंदन

समवशरण का स्मरण कर पूर्व और उत्तर दिशा के बीच ईशान्य दिशा में महाविदेह क्षेत्र है वहाँ बीस विहरमान तीर्थंकर वर्तमान में विराजमान है अत: अत्यंत भावपूर्ण हृदय से उन्हें तीन बार वंदन नमन करें ।

गुरु भगवंत को वंदन

जो गुरु आपने माने हैं उन्हें श्रध्दापूर्वक वंदना करना ।

- शुभ मुहूर्त पर गद्दी या गालीचा बिछाकर भ. महावीर स्वामीजी, श्री गौतम स्वामीजी, श्री लक्ष्मी देवी, श्री सरस्वती देवी के फोटो पूर्व या उत्तर दिशा में रखें ।
- गद्दीपर नई बहियाँ (नोट बुक), बिल बुक, चेक बुक, सुवर्ण-चांदी या धातु के देवी देवताओं के सिक्के, नया पेन पूजा की सामग्री रखें ।
- पूजा के लिए साहित्य - खाने के पान डंढल सहित, सुपारी, लौंग, इलायची, कुंकुम, वासक्षेप अक्षदा (चावल), श्रीफल (नारियल), फूल, घी का दीया, धूप, अगरबत्ती, जल, फल, ईख (Sugar cane), नैवद्य, लक्ष्मी झाडु, लाभ (लाह्या) बत्तासा, मोली, आरती के लिए कपूर।
- पूजा करनेवाले घर का मुखिया तीन नवकार मंत्र का जाप करके हाथ में मोली बाँधे । फोटो, सिक्के इनको तिलक लगाएँ अक्षदा चढावे ।
- गद्दी की दाहिनी तरफ घी का दीया और बायीं तरफ धूप अगरबत्ती लगाएँ । और साईड में ईख (Sugar cane) खडा रखें ।

॥ ॐ अर्हम् नमः ॥

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री शुभ 卐 श्री लाभ

श्री आदिनाथाय नमः **श्री शांतीनाथाय नमः**

श्री पार्श्वनाथाय नमः **श्री महावीराय नमः**

श्री सद्गुरूभ्यो नमः

श्री गौतमस्वामी की लब्धि, श्री भरतजी की ऋध्दि,
श्री अभयकुमारकी बुध्दि, श्री कयवन्नाजीका सौभाग्य,
श्री धन्ना शालिभद्रजीकी संपत्ति, श्री बाहुबलीजीका बल,
तथा श्री श्रेयांसकुमार की दानवृत्ती प्राप्त होवे !
श्री जिनशासन की प्रभावना होवे !

॥ श्री सरस्वती देवी नमः ॥ श्री महालक्ष्मी देवी नमः ॥

नूतन वर्ष

वीर संवत २५४७, विक्रम संवत २०७७

कार्तिक सुद १, सोमवार दि. १६/११/२०२०

पूजन दिन शनिवार दि. १४/११/२०२०

卐

- नवकार मंत्र बोलते-बोलते दवात, कलम, दीया, कलश, लक्ष्मी, ईख (Sugar cane) इ. को मोली बांधे । कुंकुम तिलक करें ।
- नई बही के पहले पन्नेपर बाजु की चौकट का मायना लिखें ।

लिखने के बाद कुंकुम से स्वस्तिक निकालें । नई बहियाँ पिछले वर्ष की अकाऊंट की एक बही, बिल बुक, चेक पुस्तक, लक्ष्मी इ. सभीपर डंढल सहित एक पर एक दो पान रखें । उसपर एक रुपया और उसपर सुपारी, लौंग, इलायची रखें । हाथ में पानी लेकर बही के चारों ओर घुमावे । वासक्षेप, कुंकुम मिश्रित चावल के दाने हाथ में लेकर निम्न श्लोक और मंत्र बोलें ।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः ।
मंगलं स्थूलीभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।
मंत्र – ॐ आर्यावर्ते, आस्मिन् जंबूद्वीपे
दक्षिणार्धभरते भरतक्षेत्रे-भारतदेशे (पूना) नगरे
ममगृहे श्री शारदा देवी, श्री लक्ष्मीदेवी
आगच्छ आगच्छ, तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।

अक्षदा बहीपर अर्पण करें । बाद में निम्नलिखित स्तुति का पठन करें ।

॥ स्तुती ॥

स्वश्रीयं श्रीमद् अरिहंता, सिद्धः पुरीपदम्,
आचार्यः पंचधाचारं, वाचकां वाचनांवराम्।
साधवः सिद्धी साहाय्यं वितन्वन्तु विवेकिनाम्,
मंगलानां च सर्वेषां, आद्यं भवति मंगलम् ।
अर्हमित्यक्षरं माया, बीजं च प्रणवाक्षरम्,
एवं नाना स्वरूपं च, ध्येयं ध्यायन्ति योगिनः।
हृत्पदं षोडशदलं, स्थापितं षोडशाक्षरम्
परमेष्ठिस्तुते बीजं, ध्यायेक्षरदूरदं मुदा ।
मंत्रणामादिमं मंत्रं, तंत्र विघ्नौघ निग्रहे,
ये स्मरन्ति सदैवेनं, ते भवन्ति जिन प्रभा ॥

तत्पश्चात् निम्नलिखित मंत्र जप करते-करते **जल, चंदन, पुष्प (फूल), धूप, दीप, अक्षदा (चावल), फल, नैवेद्य** इन आठ वस्तुओं से वही पूजन करें ।

ॐ ऱ्हीं श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै, सरस्वत्यै, लक्ष्मयै (जलं) समर्पयामि स्वाहा ।

दूसरी बार यही श्लोक बोलते हुए जल की जगह चंदन बोले इस प्रकार आठों ही वस्तुओं के नाम लेकर आठ बार यह श्लोक बोलें ।

पूजा में सभी सदस्य खडे होकर निम्नलिखित प्रार्थना बोलें ।

।। श्री सरस्वती स्तोत्र ।।

सकल लोक सुसेवित पंकजा
वर यशोर्जित शारद कौमुदी,
निखिल कल्मष नाशन तत्परा
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
कमल गर्भ विराजित भूधना,
मणि किरीट सुशोभित मस्तका,
कनक कुंडल भूषित कर्णिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
वसुहरिद् गज संस्नपितेश्वरी
विधृत सोमकला जगदीश्वरी,
जलज पत्र समान विलोचना
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
निज सुधैर्य जितामर भूधरा,
निहित पुष्कर वृंदल सत्कारा
समुदितार्क सदृतनु बल्लिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
विविध वांछित कामदुधाद्भूता,
विशद पद्म हृदान्तर वासिनी
सुमति सागर वर्धन चंद्रिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।

।। श्री लक्ष्मी स्तोत्र ।।

नमोस्तुते महालक्ष्मी महासौख्य प्रदायिनी
सर्वदा देही मे द्रव्यं, दानाय मुक्ती हेतवे ।। १ ।।
धनं धान्य धरां हर्ष, कीर्तिम्, आयुः यशः श्रियम्
वाहनाम् दन्तिन् पुत्रान, महालक्ष्मी प्रयच्छ मे ।।२।।
यन्मया वांछितं देवी, तत्सर्वं सफलं कुरू
न बान्ध्यन्ता कुकर्माणि, संकटान्मे निवारय ।।३।।

।। प्रार्थना ।।

सुंदर आरोग्य निवास करे दृढ तन में ।
आशा, उत्साह, उमंग भरे शुचि मन में ।
न हो अनुचित योग प्रयोग धन साधन में ।
उत्कृष्ट उच्च आदर्श जगे जीवन में ।
तम मिटे, ज्ञानकी ज्योति जगत में छाये ।
प्रभु ! दिव्य दिवाली भव्य भाव भर लाये ।

इसके बाद एक थाली में दीया लेकर कपूर से आरती करे - निम्न आरती बोले ।

।। आरती ।।

सकल जिनंद नमी करी, जिनवाणी मन लाय ।
सरस्वति लक्ष्मी करू आरती, आतम सुगुरू पसाय ।।
ज्ञान जगत में सार हैं । ज्ञान परम हितकार ।
ज्ञान सूर्य से होता है, दुरित तिमिर अपहार ।।
श्री सरस्वती प्रभाव से, लहे जगत सम्मान ।
ज्ञान बिना पशु सारिखा, पावे अति अपमान ।।
श्रद्धा मूल क्रिया कही, ज्ञान मूल है तास ।
पावे शिव सुख आतमा, इससे अविचल वास ।।
अष्टमपद विशति पदे, सप्तम नवपद ज्ञान ।
तीर्थंकर पदवी लहे, आराधक भगवान ।।

आरती के बाद निम्नलिखित अष्टदोहे बोले ।

।। अष्टदोहे ।।

अंगुष्ठे अमृत वसे लब्धितणा भंडार ।
जय गुरू गौतम समरिये, वांछित फल दातार ।।१।।
प्रभू वचने त्रिपदी लही, सूत्र रचे तेणीवार ।
चऊदह पूरब माँ रचे, लोकालोक विचार ।।२।।
भगवति सूत्र कर नमी, बंभी लिपी जयकार ।
लोकलोकोत्तर सुख भणी, वाणी लिपी अढार ।।३।।
वीर प्रभू सुखिया थया, दिवाली दिन सार ।
अंतर महूरत तत्क्षणे, सुखिया सहू संसार ।।४।।

केवलज्ञान लहे सदा, श्री गौतम गणधार ।
सुरनर पर्षदा आगले घट अभिषेक उदार ।।५।।
सुरवर पर्षदा आगले, भाखे श्री श्रुतनाण ।
नाण थकी जग जाणिये, द्रव्यादिक चौठाण ।।६।।
ते श्रुतज्ञान ने पुजिये, दीप धूप मनोहार ।
वीर आगम अविचल रहो, वर्ष एकवीस हजार ।।७।।
गुरू गौतम अष्टक कही, आणि हर्ष उल्लास ।
भाव भरी जे समरशे, पुरे सरस्वती आस ।।८।।

।। लोगस्स (चउव्वीसत्थव) का पाठ ।।

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ।।१।।
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।२।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंच वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।३।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं चं।
वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वध्दमाणं च ।।४।।
एवं मए अभित्थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा. तित्थयरा में पसीयंतु ।।५।।
कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।६।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।७।।

।। नमोत्थुणं का पाठ ।। (२ बार)

नमोत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, संय-संबुध्दाणं, परिसुत्तमाणं पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुण्डरीयाणं, पुरिसवरगंध-हत्थीण, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं दीवोत्ताणं, सरणगइपइट्ठाणं, अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं।

(दूसरे में - ठाणं संपाविउकामाणं णमो जिणाणं जियभयाणं)

(तिसरे में) णमोत्थुणं मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसयस्स अणेगगुण संजुत्तस्स जाव संपविउ कामस्स ।

।। मंगलपाठ ।।

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते-सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे-सरणं पव्वज्जामि, साहू-सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तधम्मं सरणं पव्वज्जामि। अरिहंतो का शरणा, सिद्धों का शरणा, साधुओं का शरणा, केवलिप्ररुपित दयाधर्म का शरणा। चार शरणा, दुर्गति हरणा और शरणा नहीं कोय, जो भवी प्राणी आदरे तो अक्षय अमरपद होय ।

अंगुष्ठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ।
श्रीगुरु गौतम सुमरिये, मनवांछित फलदातार।
भावे भावना भाविये, भावे दीजे दान ।
भावे धर्म आराधिये, भावे केवलज्ञान ।
पावे पद निर्वाण ।।

यहाँ दीपावली विधि संपन्न होती है । ●

दीपावली का यह दिन भगवान महावीर का निर्वाण दिन है अत: भगवान के फोटो के सामने बैठकर तन-मन को एकाग्र कर, रात्री में निम्न जप की २०-२० मालाएँ जपें ।

ॐ ऱ्हीं श्री महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नमः

बादमें

ॐ ऱ्हीं श्री महावीर स्वामी पारंगताय नमः

की मालाएँ गिनें अथवा यथाशक्ति जाप करें।

कार्तिक सूद प्रतिपदा की सूर्योदय से पूर्व स्नानादि के बाद नमस्कार महामंत्र का जप करें और

ॐ ऱ्हीं श्री गौतमस्वामी केवलज्ञानाय नमः

२० माला फेरें ।

फिर यह प्रार्थना बोले...

कुंदिंदुगोखीर तुसार वन्ना
सरोज हत्था कमले निसन्ना
वाएसिरी पुत्थय वग्ग हत्था
सुहायसा अम्ह सया पसत्था

इस प्रार्थना के बाद विद्या संपदा का महान ओजस्वी मंत्र का अवश्य जप करें (२० माला)

ॐ ऱ्हीं ॐ

जैन मंदिर या स्थानक में जाकर संतों का प्रभु का दर्शन करें । मांगलिक श्रवण करें । गौतम स्वामी को मध्यरात्री के बाद भली सुबह केवलज्ञान प्राप्त हुआ अतः उस समय 'गौतम रास' अवश्य गावें ।

दीपावली की इस विधि का यथायोग्य पालन करें। सबका भला हो मंगल हो - कल्याण हो । ●

सन २०२० चे दीपावली पूजनाचे मुहूर्त

❖ **पुष्प नक्षत्र : निज आश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद्द ७**

शनिवार दि. ७-११-२०२० : सकाळी ८.०० ते ९.३० शुभ, दुपारी १२.३० ते २.०० चल, २.०० ते ३.३० लाभ, ३.३० ते ५.०० अमृत, सायंकाळी ६.३० ते ८.०० लाभ, रात्री ९.३० ते ११.०० शुभ, ११.०० ते १२.३० अमृत

❖ **धनत्रयोदशी : (धनतेरस) निज आश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद्द १३**

शुक्रवार दि. १३-११-२०२० : सकाळी ६.३० ते ८.०० चल, ८.०० ते ९.३० लाभ, ९.३० ते ११.०० अमृत, दुपारी १२.३० ते २.०० शुभ, सायंकाळी ५.०० ते ६.०० चल

❖ **महालक्ष्मी पूजन (दीपावली वही पूजन) : निज आश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद्द ३०**

शनिवार दि. १४-११-२०२० : दुपारी २.३० ते ३.३० लाभ, ३.३० ते ५.०० अमृत, सायंकाळी ६.३० ते ८.०० लाभ, रात्री ९.३० ते ११.०० शुभ, ११.०० ते १२.३० अमृत, १२.३० ते २.०० चल, पहाटे ५.०० ते ६.३० लाभ

वृषभ लग्न कुंभ नवमांश सायंकाळी ६.१० ते ६.२४, वृषभ लग्न वृषभ नवमांश सायंकाळी ६.४९ ते ७.०२ वृषभ लग्न सिंह नवमांश सायंकाळी ७.२७ ते ७.४०

❖ **नूतन वर्ष : वीर संवत २५४७, विक्रम संवत २०७७, कार्तिक शु।। १**

सोमवार दि. १६-११-२०२० : सकाळी ६.३० ते ७.१५ (७.१५ नंतर बीजचा क्षय आहे)

श्री शुभम् भवतु !

प्रेषक : नवीनकुमार बी. शहा - २३० पाटील प्लाझा, मित्र मंडळ चौक, पुणे ९. मो. ९८२२०९०३३९
पं. भवरलाल, पुरूषोत्तम दायमा १३०६ रविवार पेठ, पुणे-२. फोन २४४७४८३५, मो. ९२७३७५१३४६